Email: biovetinnovator@gmail.com Official Website: https://biovetinnovator.in/
Fueling The Future of Science… ISSN: 3048-8397

Bio Vet Innovator Magazine

Volume 2 (Issue 6) JUNE 2025

OPEN ACCESS | WORLD MILK DAY – 01 IUNE | POPULAR ARTICLE

बकरियों के बच्चों (मेंमनों) में बीमारियों की रोकथाम में अच्छे प्रबंधन प्रथाओं की भूमिका

डॉ नरेंद्र कुमार*, डॉ महमूदा मलिक** पूर्णिमा गुमास्ता**

**प्राध्यापक; **सहायक प्राध्यपक*

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, किशनगंज- 855107,

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना

***Corresponding Author:** drnarendra9931004508@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15858963

Received: June 24, 2025
Published: June 29, 2025

© All rights are reserved by ***नरेंद्र कुमार***

आज कि परिवेश में बकरी पालन पढ़े लिखे युवाओं में काफी लोकप्रिय हो रहा है। लकिन बकरी पालन पालन में सफल किसानो कि संख्या कम है। इसका प्रमुख कारण बकरियों के बच्चों (मेंमनों) में मृत्यु दर अधिक है। बकरी व्यवसाय की सफलता का प्रमुख आधार बकरी के बच्चों का जीवित एवं स्वस्थ रखना है। बकरी पलकों में पाया गया है कि एक माह तक के बच्चों में मृत्यु दर 15 से 40 प्रतिशत तक पहुँच जाती है। सफल उद्यमी को प्रयास करना चाहिए कि जन्म से 3 माह तक मृत्यु दर 10 प्रतिशत से कम रहे।

रोग का प्रकोप तीव्र होने पर तथा उचित उपचार में विलंब होने पर बच्चों में मृत्यु दर अधिक हो जाती है। जीवित बचे हुए रोगी मेमनों की शारीरिक भार वृद्धि और विकास दर घट जाती है, अत: बकरी के बच्चों का उचित प्रबन्धन और देखरेख पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। बकरी के बच्चे के जन्म के बाद कुछ प्रमुख रोगों की सम्भावनायें रहती है, इसलिए इन बच्चों की उचित देखभाल एवं विभिन्न बीमारियों से बचाव तथा उनके उचित उपचार व्यवस्था अत्यधिक महत्वपूर्ण है। स्वास्थ्य प्रबन्धन में थोड़ी सी लापरवाही मेंमनों की विकास दर को प्रभावित कर सकती है।

मेंमनों में रोगों की "रोकथाम का आधार" में प्रभावी प्रबंधन महत्वपूर्ण भूमिका है। चूँकि बच्चे अपनी अपरिपक्व प्रतिरक्षा प्रणाली के कारण संक्रमण के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं, इसलिए उचित देखभाल, तनाव को कम करती है, रोगाणुओं के संपर्क को कम करती है, और प्रतिरक्षा को बढ़ाती है। बीमारियों की रोकथाम में अच्छे प्रबंधन तरीकों की मुख्य भूमिकाएँ इस प्रकार है।

मेंमनों में मजबूत रोग प्रतिरक्षा छमता मेंमनों को बीमारियों से रोकथाम सुनिश्चित करता है:-

रोग प्रतरोधक क्षमता को बढ़ने में कोलोस्ट्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बकरियों में कोलोस्ट्रम खिलाना: कोलोस्ट्रम नवजात बकरी के बच्चों के लिए **तरल सोना** है - यह जीवित रहने के लिए, आवश्यक एंटीबॉडी, पोषक तत्व और ऊर्जा प्रदान करता है। खराब कोलोस्ट्रम प्रबंधन से कमज़ोर प्रतिरक्षा, बीमारी की संवेदनशीलता और उच्च मृत्यु दर होती है।

कोलोस्ट्रम क्यों महत्वपूर्ण है?

- निष्क्रिय प्रतिरक्षा – बकरी के बच्चे बिना किसी एंटीबॉडी के पैदा होते हैं; कोलोस्ट्रम के द्वारा ही मेंमनों को एंटीबाडी प्राप्त होती है जो कि इन बिमारिओं ई. कोली (स्कोर्स)- क्लोस्ट्रीडियम (एंटरोटॉक्सिमिया) पेस्टुरेला (निमोनिया)से बचता है अथवा सुरक्षा प्रदान करता है.
- ऊर्जा और पोषण- गर्मी और विकास के लिए उच्च वसा/प्रोटीन।
- आंत की सुरक्षा – बैक्टीरिया/वायरल लगाव को रोकता है।
- कोलोस्ट्रम और पोषण प्रबंधन
- कोलोस्ट्रम प्रबंधन
- समय पर सेवन: सुनिश्चित करना चाहिये कि प्रत्येक मेमना को जन्म के पहले 2-6 घंटों के भीतर उच्च गुणवत्ता वाले कोलोस्ट्रम का सेवन करें (पहले 24 घंटों में कम से कम शरीर के वजन का 10%)।

- गुणवत्ता जांच: पर्याप्त एंटीबॉडी के लिए कोलोस्ट्रम का परीक्षण करना चाहिये (कोलोस्ट्रोमीटर या रिफ्रैक्टोमीटर का उपयोग करें)।
- वैकल्पिक स्रोत: यदि माँ का दूध अपर्याप्त है तो संग्रहित कोलोस्ट्रम या वाणिज्यिक कोलोस्ट्रम रिप्लेसर्स का उपयोग करना चाहिये।
- कोलोस्ट्रम सेवन (जन्म के 6 घंटे के भीतर) ई. कोली, क्लोस्ट्रीडियल संक्रमण और सेप्टिसीमिया जैसी बीमारियों के खिलाफ निष्क्रिय प्रतिरक्षा प्रदान करता है।
- उचित दूध पिलाना (पाश्चुरीकृत दूध या उच्च गुणवत्ता वाला प्रतिस्थापन) पोषक तत्वों की कमी और जीवाणु संक्रमण को रोकता है।
- क्रीप फीडिंग (उच्च प्रोटीन स्टार्टर फ़ीड) रुमेन विकास का समर्थन करता है और वीनिंग तनाव को कम करता है।

टीकाकरण और कृमि मुक्ति कार्यक्रम:

- माताओं का टीकाकरण (जैसे, सीडीटी वैक्सीन) कोलोस्ट्रम के माध्यम से एंटीबॉडी स्थानांतरण सुनिश्चित करता है। सीडीटी (क्लोस्ट्रीडियम परफ्रिंजेंस टाइप सी और डी तथा टेटनस) टीका बकरियों के लिए मुख्य टीकाकरण है, तथा अनुशंसित कार्यक्रम में गर्भवती बकरियों, बच्चों तथा वयस्कों के लिए वार्षिक बूस्टर टीकाकरण शामिल है।
- रणनीतिक कृमि मुक्ति (मल परीक्षण के आधार पर) परजीवी संक्रमण (जैसे, कोक्सीडियोसिस, स्ट्रॉन्गाइल्स) को रोकता है।

मेंमनों को रोगाणुओं के संपर्क में आने से बचाना चाहिये:

- **स्वच्छता और सफाई:** साफ, सूखे किडिंग पेन बैक्टीरिया और वायरल लोड को कम करते हैं (जैसे, ई. कोली, साल्मोनेला)।
- **नाभि डुबाना:** (7% आयोडीन) नाभि की बीमारी (ओम्फलाइटिस) और जोड़ों के संक्रमण को रोकता है। खिलाने वाली बोतलों का कीटाणुशोधन दस्त (दस्त) को रोकता है।
- **जैव सुरक्षा उपाय:** नई बकरियों को 2-4 सप्ताह तक क्वारंटीन में रखें ताकि बीमारी (जैसे, सीएई, जॉन्स रोग) को रोका जा सके। पैरों को नहलाना और खेत में सीमित पहुंच से पैरों की सड़न और बाहरी परजीवियों को कम किया जा सकता है।

तनाव को कम करना चाहिये: (तनाव एक प्रमुख बीमारी ट्रिगर कारक है)

- **उचित आवास और वेंटिलेशन:** सांस संबंधी बीमारियों (निमोनिया) और परजीवी प्रसार को कम करने के लिए भीड़भाड़ से बचाना चाहिये। अच्छा वेंटिलेशन अमोनिया गैस के संग्रह को को रोकता है। अमोनिया गैस का संग्रह फेफड़ों की सुरक्षा को कमजोर करता है। अतः अच्छा वेंटिलेशन बकरी आवास के लिये जरुरी है।
- **सूखा बिस्तर:** ठंड और बैक्टीरिया के विकास को रोकता है।

कम तनाव वाली हैंडलिंग और धीरे धीरे दूध छुड़ाना:

- धीरे-धीरे दूध छुड़ाने से (8-12 सप्ताह में) कुपोषण और रोग प्रतिरक्षा प्रणाली पर कोई विपरीत असर नहीं पड़ता है। कोमल हैंडलिंग-कोर्टिसोल के स्तर को नियंत्रित करती है, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को बनाए रखती है। लम्बे समय तक उच्च कोर्टिसोल के संपर्क में रहने से प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर हो सकती है, चयापचय प्रक्रियाएं बाधित हो सकती हैं।

प्रारंभिक रोग का पता लगाना और नियंत्रण:

- मेंमनों के दैनिक स्वास्थ्य जाँच करना चाहिये, तथा (दस्त, खांसी, सुस्ती) लक्छण दिखाई देने पर शीघ्र उपचार चाहिये। बीमार बच्चों को अलग रखना चाहिये। अलग रखने से मेंमनों में (जैसे, कोक्सीडियोसिस, निमोनिया) आदि बीमारी का प्रसार कम कम होता है।
- रिकॉर्ड रखने से रोग पैटर्न और टीकाकरण कार्यक्रम को ट्रैक करने में मदद मिलती है।

बच्चों (मेंमनों) की आम बीमारियों से बचाव:

A. एन्टेरोटोक्सिमिया: एंटरोटॉक्सिमिया एक घातक जीवाणु रोग है, जो क्लोस्ट्रीडियम परफ्रिंजेंस प्रकार C और D के कारण होता है। यह बकरियों, विशेष रूप से बच्चों और तेज़ी से बढ़ने वाले जानवरों में अचानक मौत का कारण बनता है। बैक्टीरिया आंत में शक्तिशाली विषाक्त पदार्थ पैदा करते हैं, जिसका इलाज न किए जाने पर तेजी से मौत हो सकती है।

कारण और जोखिम कारक:

- अनाज/उच्च-कार्ब फ़ीड का अधिक सेवन → तेज़ किण्वन → जीवाणु विष का उत्सर्जन
- आहार में अचानक परिवर्तन* (जैसे, हरा-भरा चारागाह, उच्च सांद्रता वाला भोजन)
- तनाव कारक (दूध छुड़ाना, परिवहन, खराब कृमि मुक्ति)
- टीकाकरण की कमी (बिना टीकाकरण वाले झुंडों में सबसे आम)
- तीव्र (सबसे आम)(Peracute)
- गंभीर दस्त (खूनी या पानी जैसा)
- पेट में दर्द (पेट पर लात मारना, दांत पीसना)
- न्यूरोलॉजिकल लक्षण (डगमगाना, ऐंठन, पैडलिंग)
- सूजन और अवसाद
- 2-12 घंटे के भीतर मृत्यु
- अचानक मृत्यु (अचानक मृत्यु)
- बिना किसी पूर्व लक्षण के मृत पाया गया (बच्चों में आम)

रोकथाम और नियंत्रण:

1. टीकाकरण (सबसे प्रभावी विधि)

✓ गर्भवती बकरियों को टीका लगाएं (बच्चा पैदा होने से 4-6 सप्ताह पहले) → कोलोस्ट्रम के माध्यम से एंटीबॉडी पास करें।

- ✓ बच्चे: पहला टीका, 4-6 सप्ताह पर, बूस्टर 3-4 सप्ताह बाद।
- ✓ सभी बकरियों के लिए वार्षिक बूस्टर (विशेष रूप से यदि उच्च-अनाज आहार पर हैं)।
- ✓ प्रयुक्त टीका: सीडी एंड टी (क्लोस्ट्रीडियम परफ्रिंजेंस प्रकार सी और डी + टेटनस टॉक्सोइड)*

2. आहार प्रबंधन

- ✓ आहार में अचानक बदलाव से बचें (धीरे-धीरे अनाज/हरे-भरे चारागाह शामिल करें)।
- ✓ उच्च कार्बोहाइड्रेट वाले आहार को सीमित करें (अनाज की अधिकता को रोकें)।
- ✓ अच्छी गुणवत्ता वाली घास दें (फाइबर पाचन को धीमा करने में मदद करता है)।

3. तनाव कम करें

- ✓ धीरे-धीरे दूध छुड़ाना (माँ से अचानक अलग होने से बचें)।
- ✓ उचित परजीवी नियंत्रण (कीड़े आंत के स्वास्थ्य को खराब करते हैं)।
- ✓ स्वच्छ, सूखा आवास (द्वितीयक संक्रमण को रोकता है)।

4. आपातकालीन उपचार (यदि समय रहते पता चल जाए)

- ✓ एंटीटॉक्सिन इंजेक्शन (सीडी&टी एंटीटॉक्सिन, यदि उपलब्ध हो)।
- ✓ पेनिसिलिन या टेट्रासाइक्लिन एंटीबायोटिक (बैक्टीरिया को मारने के लिए)।
- ✓ मौखिक इलेक्ट्रोलाइट्स और प्रोबायोटिक्स (आंत की रिकवरी में सहायता करते हैं)।
- ✓ पेट दर्द के लिए दर्द निवारक (बैनमाइन)।

प्रकोप को बढ़ावा देने वाली सामान्य गलतियाँ:

- ✓ बच्चियों या मादा बकरियों का टीकाकरण न करना* (सबसे अधिक रोकथाम योग्य कारण)।
- ✓ अनाज या छर्रे अधिक खिलाना (विशेष रूप से शो बकरियों में)।
- ✓ कोलोस्ट्रम का कम सेवन (बिना टीकाकरण वाली मादा बकरियों में = कोई प्रतिरक्षा हस्तांतरण नहीं)।
- ✓ शुरुआती लक्षणों को नज़रअंदाज़ करना (दस्त, सूजन → तेजी से मृत्यु)।

आर्थिक प्रभाव:

- ✓ उच्च मृत्यु दर (बिना टीकाकरण वाले झुंडों में 100% तक)।
- ✓ मूल्यवान बच्चों/प्रजनन स्टॉक की हानि।
- ✓ उपचार लागत* (एंटीटॉक्सिन, एंटीबायोटिक्स, पशु चिकित्सक बिल)।

B. बकरियों में कोलीबैसिलोसिस: कोलीबैसिलोसिस एक जीवाणु रोग है जो E.coli एसचेरिचिया कोली के रोगजनक उपभेदों के कारण होता है, जो मुख्य रूप से नवजात बकरी के बच्चों को प्रभावित करता है। यदि समय रहते इसका प्रबंधन न किया जाए तो यह गंभीर दस्त (स्कोर्स), सेप्टीसीमिया और उच्च मृत्यु दर का कारण बनता है।

कारण और जोखिम कारक:

- प्राथमिक रोगजनक: ई. कोली (विशेष रूप से एंटरोटॉक्सिजेनिक ईटीईसी और सेप्टिकमिक स्ट्रेन)।
- इसमें आम: नवजात बच्चे (1-14 दिन के) जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है।
- गंदे बच्चों वाले वातावरण (दूषित बिस्तर, अस्वच्छ दूध की बोतलें)।
- अपर्याप्त कोलोस्ट्रम सेवन (कम एंटीबॉडी सुरक्षा)।
- अधिक भीड़भाड़ और खराब वेंटिलेशन (बैक्टीरिया का भार बढ़ाता है)।

रोकथाम और नियंत्रण:

कोलोस्ट्रम प्रबंधन में सुधार करें

- जन्म के 2 घंटे के भीतर कोलोस्ट्रम पिलाएं (पहले 24 घंटों में शरीर के वजन का ≥10%)
- उच्च गुणवत्ता वाले कोलोस्ट्रम को सुनिश्चित करें (रिफ्रैक्टोमीटर से जांच करें, ब्रिक्स >22%)।
- यदि माँ का दूध अपर्याप्त है तो कोलोस्ट्रम रिप्लेसर्स का उपयोग करें।

स्वच्छता और सफाई

- जन्म के बीच में किडिंग पेन को साफ और कीटाणुरहित करें।
- नाभि के लिए आयोडीन डिप का उपयोग करें (बैक्टीरिया के प्रवेश को रोकता है)।
- खिलाने वाली बोतलों/निप्पलों को गर्म, साबुन वाले पानी से धोएं।
- दूध को जमा होने से बचाएं (इसमें बैक्टीरिया हो सकते हैं)।

टीकाकरण (जहां उपलब्ध हो)

- गर्भवती मादा को ई. कोली वैक्सीन* (यदि स्थानीय रूप से उपलब्ध हो) से टीका लगाएं।
- कोलोस्ट्रम के माध्यम से एंटीबॉडी प्रदान करता है*।

प्रारंभिक उपचार (यदि संक्रमण होता है):

- मौखिक पुनर्जलीकरण चिकित्सा* (इलेक्ट्रोलाइट्स + प्रोबायोटिक्स)।
- एंटीबायोटिक्स (जैसे, एनरोफ्लोक्सासिन, ट्राइमेथोप्रिम-सल्फा) पशु चिकित्सक के मार्गदर्शन में।
- दर्द और सूजन के लिए NSAIDs (जैसे, बैनामाइन)
- बीमार बच्चों को अलग रखें ताकि संक्रमण को फैलने से रोका जा सके।

प्रकोप को बढ़ावा देने वाली सामान्य गलतियाँ:

- कोलोस्ट्रम खिलाने में देरी (बच्चे पहले 6 घंटों में एंटीबॉडी को सबसे बेहतर तरीके से अवशोषित करते हैं)।
- गंदे दूध की बोतलें या निप्पल (संक्रमण का मुख्य स्रोत)।
- अत्यधिक भीड़भाड़ वाले, नम बच्चे पालने (बैक्टीरिया के विकास को बढ़ावा देते हैं)।
- निदान के बिना एंटीबायोटिक दवाओं का अत्यधिक उपयोग (प्रतिरोध को जन्म दे सकता है)।

आर्थिक प्रभाव:

- बच्चों की उच्च मृत्यु दर (अनुपचारित मामलों में 80% तक)।
- उपचार और श्रम की लागत।
- जीवित बचे बच्चों में वृद्धि में कमी।

C. न्यूमोनिया: न्यूमोनिया बकरी के बच्चों में होने वाला एक महत्वपूर्ण रोग है। यह जीवाणु व गाइकोप्लाजमा जनित संक्रामक रोग है। न्यूमोनिया की सम्भावना विषाणु जनित रोगों के उपरान्त, मौसम में आकस्मिक बदलाव, बाड़े में भीड़, परजीवी संक्रमण, स्थान परिवर्तन, कुपोषण अथवा फफूंदी लगा दाना खाने के कारण बढ़ जाती है। न्यूमोनिया रोग संक्रमणित हवा, पानी व दाने चारे के द्वारा फैलता है।

लक्षण:

न्यूमोनिया रोग के लक्षण है- तीव्र ज्वर (104-106 फैरेनहाइट), खांसी, सास लेने में कठिनाई, सुधा हीनता. आँख व नांक से साव इत्यादि।

इस रोग के उपचार के लिए पशु चिकित्सक के निर्देशानुसार एन्टीबायोटिक दवा जैसे पैनीसिलिन, एम्पीसिलिसन, टैटरासाइक्लन, टाइलोसिन, सेफटियोफर देना चाहिए इस रोग के कारण बच्चों की मृत्यु दर बढ़ जाती है।

रोकथाम और नियंत्रण:

न्यूमोनिया से बचाव के लिए आवश्यक है कि मेमनों को साफ सुथरे हवादार बाड़े/ पशुशाला में रखा जाये। मेमनों को अधिक गर्म, अधिक सर्दी व बदलते मौसम से बचाना चाहिए। उन्हें साफ सुथरा दाना व पानी देना चाहिए। संक्रमित पशुओं को अलग कर देना चाहिए।

आर्थिक प्रभाव:

- बच्चों की उच्च मृत्यु दर (अनुपचारित मामलों में 80% तक)।
- उपचार और श्रम की लागत।
- जीवित बचे बच्चों में वृद्धि में कमी।

निष्कर्ष:

मेंमनों में बीमारियों को रोकने के लिए अच्छे प्रबंधन का अभ्यास सबसे अधिक लागत प्रभावी तरीका है। इन प्रबंधनों पर ध्यान केंद्रित करके: जैसे

- कोलोस्ट्रम और पोषण (प्रतिरक्षा)
- स्वच्छता और जैव सुरक्षा (रोगज़नक़ नियंत्रण)
- कम तनाव वाला वातावरण (प्रतिरक्षा दमन को रोकता है)
- शीघ्र पहचान और टीकाकरण (रोग की रोकथाम)

मेंमनों की मृत्यु दर को काफी कम कर सकते हैं और स्वस्थ, अधिक उत्पादक बकरियाँ पाल सकते हैं।

Citation: डॉ नरेंद्र कुमार, डॉ महमूदा मलिक, पूलणिमा गुमास्ता. (2025). बकरियों के बच्चों (मेंमनों) में बीमारियों की रोकथाम मेंअच्छे प्रबंधन प्रथाओं की भूमिका. **In Bio Vet Innovator Magazine (Vol. 2, Issue 6, pp. 38–41). Bio Vet Innovator Magazine. https://doi.org/10.5281/zenodo.15858963**